शबरीकुंभ : एक परिचय

पितृ आज्ञा का पालन करने हेतु भगवान राम वनवासी बने। दंडकारण्य स्थित पंचवटी में आकर रावण ने माता सीता का अपहरण किया। सीताजी की खोज में निकले श्री राम और लक्ष्मण जी एक दिन माता शबरी की झोंपड़ी पर पधारे। वर्षों से भगवान राम के आगमन की प्रतीक्षा कर रही शबरी माता के घर में जैसे स्वर्ण-सूर्योदय हुआ। शबरी माता ने अपने हर्षाश्रु से प्रभु चरणों का अभिषेक किया। प्रभुश्री राम के आगमन और शबरी माता की भक्ति से यह भूमि धन्य हो गई।

यह प्रसंग श्री रामचरित मानस के 'अरण्यकांड' में है। श्री तुलसीदास जी स्वयं इसका वर्णन करते हुये कहते हैं।

ताहि देइ गति राम उदारा। शबरी के आश्रम पगु धारा।
शबरी देखि राम गृह आये। मुनि के वचन समुझि जिय भाये।

वर्तमान परंपरा :

शरद पूर्णिमा शबरी माता का जन्मदिन है। इस दिन, प्रतिवर्ष शबरी धाम में मेला लगता है। वसंतपंचमी (माघ शुक्ल, पंचमी) इस भूमि पर भगवान श्री राम के पर्दापण का शुभ दिन है। इस दिन श्री राम-लक्ष्मण यात्रा अति उत्साह से गाँव-गाँव में भ्रमण कर शबरीधाम पहुँचती है। यहाँ के बंधुओं ने प्रभु रामचंद्रजी के आगमन के इस मंगलमय अवसर को श्री शबरी कुंभ के रूप में मनाने का सामूहिक संकल्प किया है।

लाखों वर्षों के बाद सन् २००२ में इसी पवित्र धाम में वनवासी बंधुओं ने पूज्य मुरारी बापू के श्रीमुख से रामकथा का रसपान किया। कथा के दौरान पूज्य मुरारी बापू ने सहज भाव से कुंभ आयोजन का आह्वान किया जिसका सबने सहर्ष स्वीकार किया और श्री शबरीकुंभ की घोषणा की गई।

इस पवित्र स्थान अर्थात शबरीधाम पर निर्मित भव्य मंदिर में शरद पूर्णिमा - २००४ को माता शबरी और श्री राम लक्ष्मण जी की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

कुंभ, हिन्दू समाज की सांस्कृतिक परंपरा है। इस निमित्त एकत्र होने वाले सभी विविध विषयों पर विचार-विमर्श कर साधु संतों का मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं।

शबरी माता के गुरु मातंग ऋषि और अन्य ऋषिगण जहाँ स्नान करते थे उस पवित्र पंपा सरोवर के किनारे श्री शबरी कुंभ सं. २०६२ माघ शुक्ल, पूर्णिमा, (११, १२, १३ फरवरी २००६) के दिन आयोजित किया गया है।

श्री शबरी कुंभ के निमित्त पवित्र स्नान, कुंभ पूजन, भजन-सत्संग तथा धर्म सभा का आयोजन किया गया है। सभी धर्मप्रेमी हिन्दू भाई-बहनों को श्री शबरी कुंभ में सहभागी होने हेतु श्री शबरी कुंभ आयोजन समिति आमंत्रित करती है।

शबरी धाम और डांग के अन्य तीर्थस्थान :

भारत की पश्चिमी और गुजरात-महाराष्ट्र की दक्षिण-उत्तरी सीमा पर डाँग जिला है । गुजरात के वलसाड, नवसारी, सूरत आदि जिलों और महाराष्ट्र के नाशिक, नंदुरबार, धुले आदि जिलों का निकटवर्ती यह पहाड़ी क्षेत्र अत्यंत मनोरम और सदा हरा भरा रहता है।

डांग जिले का क्षेत्र पुरातन काल से दंडकारण्य के नाम से जाना जाता है । महर्षि बाल्मीकि रचित रामायण के अरण्यकांड में उल्लिखित पंचवटी से दक्षिण-पश्चिम में स्थित 'दंडकारण्य' यही भूमि है। जिला केन्द्र आह्वा स्थित दंडकेश्वर महादेव का मंदिर इसका परिचय देता है । डाँग धर्मभूमि है । इस क्षेत्र के विभिन्न धार्मिक स्थानों पर आज भी लाखों भक्तगण समय-समय पर एकत्र होते हैं।

डाँग की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान रामायण काल तक जाती है । जिले में स्थित अनेक तीर्थस्थान इसका प्रमाण हैं। अतः उनमें से कुछ की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करें जिससे क्षेत्र के प्रवास का आनंद प्राप्त हो सकेगा।

शबरीधाम :

आह्वा से ३५ कि.मी. दूर यह धाम सुबीर गाँव के पास है। 'चमक-डोंगर' नाम से प्रसिद्ध पहाड़ी पर प्रभु श्री राम और लक्ष्मण की शबरी माता से भेट हुई थी, ऐसी स्थानीय मान्यता है । जिस शिला पर भगवान राम और लक्ष्मण बैठे थे वे दो शिलायें आज भी वहाँ दर्शनीय हैं। कितने ही वर्षों से धर्माभिमानी वनवासी समाज उनकी भक्तिभावना से पूजा करता है। वाल्मीकि रामायण में यह उल्लेख है कि प्रभु श्री रामचंद्रजी के दर्शन के पश्चात शबरी माता ने योगाग्नि से अपनी जीवन लीला पूर्ण कर दी। इस योगाग्नि के प्रकाश से यह पर्वत और सारा क्षेत्र प्रकाशित हो उठा। संभवतः इसीलिये इस पहाड़ी को 'चमक-डोंगर' नाम से सब जानने लगे, ऐसी एक अन्य मान्यता है।

शबरी धाम एक पवित्र तीर्थ स्थान है जहाँ वर्ष भर विविध धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है, जो समाज को जागृत करता है। प्रति वर्ष शरदपूनम के दिन यहाँ मेला लगता है। भारत के सभी तीर्थस्थानों का दर्शन कर लेने के बाद यदि शबरीधाम की यात्रा शेष रह जाय तो अपनी यात्रा अधूरी मानी जाती है ऐसी लोगों की श्रद्धा है। कुंभ पर्व हेतु शबरी धाम का विकास हो रहा है।

पंपा सरोवर :

शबरी धाम से ६ कि.मी. दूर स्थित पंपा सरोवर अर्थात शबरीकुंभ का स्थान। रामायण में पंपा सरोवर पुष्करिणी नदी के किनारे बताया गया है। यहाँ भी पूर्णा नदी प्रवाहित है जो पुरातन समय में 'पुष्करिणी' के नाम से जानी जाने की संभावना है। पंपा सरोवर के किनारे विशाल संख्या में सुगंधित पुष्प दिखाई देते हैं। रामायण में करंज पुष्प का वर्णन है और पंपा सरोवर के पास के 'करंजड़ा' गाँव का नाम शायद इन्हीं पुष्पों के कारण पड़ा होगा। मातंग पर्वत भी पंपा सरोवर के पास ही है।

सीतावन :

शबरी धाम से लगभग २६ कि.मी. की दूरी पर सीता वन है। सीता माता के पावन चरणों का स्पर्श कर पवित्र हुये इस वन में बारहो महीने हरीतिमा रहती है। यहाँ की विशेषता है कि यहाँ पुष्पों के साथ-साथ फल और औषधीय वनस्पतियाँ भी प्राप्त होती हैं। इस प्रकार की वनस्पतियों से ही यह वन समृद्ध है। यहाँ से उपर की ओर पंजारवाडी नामक स्थान पर सिर्फ बेर उत्पन्न होते हैं ऐसी भी मान्यता है कि शबरी माता ने भगवान राम के लिये बेर यहीं से लिये थे।

अंजन कुंड :

शबरी धाम से ५१ कि.मी. दूर पर्वतमाला में स्थित यह कुंड रामभक्त हनुमानजी की माता अंजनी देवी के नाम से प्रसिद्ध है। अंजनी देवी ने इस कुंड में स्नान किया था और हनुमानजी का जन्म भी इन्हीं पर्वतों की गुफा में हुआ था ऐसी यहाँ जनश्रुति है।

रामायण में सुग्रीव के निवास का जो वर्णन है उसके साथ मेल खाती गुफायें यहाँ की पर्वत मालाओं में विद्यमान हैं। नीचे पवित्र कुंड है। जिसके पास लक्ष्मणजी ने अपने तीर को एक पत्थर पर घिसकर उसे धारदार बनाया था, उसका निशान भी बताया जाता है। हनुमान जी सीता माता की खोज करने निकले तब, जिस मार्ग से चारण जाते हैं वह मार्ग चुना था। आज भी चारण समाज उस मार्ग के नजदीकी क्षेत्रों में निवास करता है जो इस मान्यता की पुष्टि करता है। इस अंजनकुंड तक जाने का मार्ग दुर्गम है परंतु एक बार वहाँ पहुँचने के बाद का अनुभव चिरस्मरणीय है।